 ISSN : 2347-7660 (Print) | ISSN : 2454-1818 (Online)

ग्रामीण महिलाओं पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

डॉ0 निर्मल सिंह यादव

आकाशवाणी के सामने, ठाटीपुर गाँव,
गाँधी रोड, ग्वालियर (म.प्र.), भारत–474002

आधुनिकीकरण सतत चलने वाली प्रक्रिया है हॉलपर्न (1965) ने आधुनिकीकरण को रूपान्तरन से संवंर्धित माना है जिसके अन्तर्गत समस्त पहलुओं, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, अध्यात्मिक का रूपान्तरण किया जाता हे। इसके द्वारा परम्परागत समाजों में परिवर्तन लाया जाता है।

आधुनिकीकरण का क्षेत्र

आधुनिकीकरण में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है इसमें औद्योगीकरण, नगरीकरण, संचार के साधनों में परिवर्तन, चिकित्सा के क्षेत्र में नवीनता तथा परम्परागत शिक्षा के स्थान पर तकनीकी शिक्षा का विकास होता है। इसके अलावा धर्म के क्षेत्र में परम्परागत से अलग बौद्धिकता की ओर वरन तथा सामाजिक क्षेत्र में प्राचीन मूल्यों के स्थान नए मूल्यों को अपनाया जाता है। इसे ही आधुनिकीकरण कहते हैं।

आधुनिकीकरण की विशेषताएं

डेनिफल लर्नर (2005)ने आधुनिकीकरण की निम्न विशेषताओं का उल्लेख किया है

1. शिक्षा तथा गतिशीलता में वृद्धि
2. नगरीकरण
3. शिक्षित लोगों के मध्य सहभागिता में वृद्धि
4. जनता का राजनीतिकरण
5. औद्योगीकरण
6. लौकिकीकरण

भारत गांवों का देश है यहां की लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी ग्रामों में निवास करती है। ऐतिहासिक काल में भारत में ग्रामीण और शहरी महिलाओं की भूमिका में बहुत अधिक अंतर नही था क्योंकि तकनीकी की प्रधानता न होने से श्रम का समान महत्व नगर और गाँवों में था। पांरपरिक अर्थव्यवस्था होने के कारण कुम्हार के साथ कुम्हारिन और लुहार के साथ लोहारिन की प्रास्थिति का उल्लेख किए बिना सामाजिक ताने–बाने को नहीं समझा जा सकता है।

महिलाएं ग्रामीण समाज का आधा हिस्सा है उनका योगदान और उनके लिए योगदान पर ही समाज की उन्नति का भार निहित है। भारतीय ग्रामों का आधुनिकीकरण भारत पर ब्रिटेन के प्रभुत्व के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। आइजेन स्तेड़ ने लिखा है, ''ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिकीकरण उस प्रकार की सामाजिक,आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्थाओं की ओर परिवर्तन की प्रक्रिया है जो कि सत्रहवीं से उन्नीसवी शताब्दी तक पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी अमेरीका में और बीसवीं शताब्दी तक दक्षिण अमेरीका, एशियाई व अफ्रीकी देशों में विकसित हुई।'' यह एक दिशा या क्षेत्र में होने वाला परिवर्तन नहीं वरन् यह एक बहुदिशा वाली प्रक्रिया है। साथ ही यह किसी भी प्रकार के मूल्यों से बंधी हुई नहीं है फिर भी कभी–कभी इसका अर्थ अच्छाई से ले लिया जाता है।

''मैरियन जे लेवी ने आधुनिकता की परिभाषा में शक्ति के जड़ स्रोतों के प्रयोग को महत्व प्रदान किया है।'' ग्रामीण भारत में इस परिप्रेक्ष्य में पहले हाथ की चक्की से आटा महिलाएँ पीसती थीं। अब विद्युत चक्की से पिसा हुआ आटा उन्हें मिल जा रहा है पुनः पहले भोजन का पकना चूल्हे से होता था अब उज्जवला योजना के तहत प्रत्येक परिवार को गैस कनेक्शन दिए जा चुके है इससे महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार आया है और श्रम में कमी परिलक्षित हुई है। ग्रामीण जीवन में पहले महिलाऐं सर पर पानी भरने का कार्य करती थी अब यांत्रीकरण के कारण ऐसे कार्य सीमित हो गए हैं।

डॉ. योगेन्द्र सिंह ने आधुनिक होने का अर्थ फैशनेबल से लिया है। आज टेलीविजन व संचार क्रांति के परिणामस्वरूप उपभोक्तावादी संस्कृति पर प्रसार हुआ है जिसका प्रभाव ग्रामीण महिलाओं के जीवन भर पड़ना स्वाभाविक है। ग्रामीण महिलाएं पाश्चात्य परिधान पहन रही हैं और बाह्य देशों के आचरण का भी अनुसरण कर रही है। ग्रामीण महिलाएं अपने पहनावे व बोलचाल में परिवर्तन ला रही हैं।

ग्रामीण महिलाओं के जीवन में शिक्षा का प्रसार ने दूरगामी प्रभावों का सूत्रपात किया है। शिक्षा ही वह माध्यम है जो हमे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है अज्ञानता को नष्ट कर देती है तथा मानव को मनुष्यता के उच्च बिन्दुओ तक अग्रसर कर देती है। भारतीय गांवों में महिलाओं के जीवन को पिछड़ा रखने में पर्दाप्रथा एक बड़ा कारक रही थी। इसके मूल में ही नारियों का शोषण, उन पर थोपी गयी पवित्रता–अपवित्रता की मान्यता और दोयम दर्जे की प्रस्थिति की स्वीकारोक्ति आदि कारणों को शिक्षा के प्रसार ने धीरे–धीरे समाप्त कर दिया है।

ग्रामीण महिलाएं एवं आधुनिकीकरण

भारत में जातिवादिता और लैंगिक विषमताओं के चलते महिलाओं की सामाजिक स्थिति इस आधुनिकीकरण के बावजूद उतनी सुदृढ़ नहीं है। जितनी होनी चाहिये थी। फिर भी इस आधुनिकीकरण के प्रभाव से महिलाऐं वंचित नहीं है। वे घर से बाहर निकलकर कार्य करने लगी हैं। अब वे घर की चार दिवारी में रहकर जीवन जीने को विवश नहीं है। वे अब अपने आपको स्वतंत्र महसूस करती हैं ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं अपने बच्चों की पढ़ाई–लिखाई, रहन–सहन आधुनिक बना रही है।

इस आधुनिक युग में ग्रामीण महिलायें गाँवों में सरपंच का पद सम्भाल रही है जिसके लिये उन्हें पंचायत में 33 प्रतिशत आरक्षण भी दिया गया है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आधुनिकीकरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। चाहें रहन–सहन, खाना–पीना, साज–सज्जा, काम करने के तरीके, घरों में आधुनिक वस्तुओं उपयोग यह दर्शाता है कि उनका जीवन आधुनिकीकरण के कारण बदल गया है। वर्तमान भारतीय ग्रामीण महिलाएं सहकारिता के सिद्धांतों को अपनाकर कई दुग्ध उत्पादन केन्द्रों का सफल संचालन कर रही है। अब वह वह केवल घरों में बच्चों को जनने का कार्य ही नहीं कर रही है अपितु देश व समाज को मजबूती प्रदान करने में अपना संपूर्ण योगदान दे रही है।

इससे ग्रामीण महिलाओं के दायित्व बढ़ गए है। आज वह दोहरी भूमिका का निर्वतन कर रही है। घर में उनके पूर्ववत किए जा रहे कार्यों में एवं भूमिकाओं में बहुत बड़ा बदलाव नहीं आया है। साथ ही उनके बाहरी कार्य विस्तृत हुए है। इससे महिलाओं को शारीरिक एवं मानसिक

ISSN : 2347-7660 (Print) | ISSN : 2454-1818 (Online)

चुनौतियां अधिक मिल रही है आज वह अधिक जिम्मेदारी वाला तार्किक जीवन जी रही हैं तथा अपने बुद्धि विवेक के आधार पर निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्राप्त हुई है।

सामाजिकता के बुनियादी ताने–बाने में आधुनिकीकरण ने महत्वपूर्ण बदलाव दिए है ग्रामीण महिलाओं में बदलाव स्पष्ट दिखाई दे रहे है। स्पष्ट है कि आधुनिकता हमारी ग्रामीण महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव लेकर आई है इसीके प्रभाव से महिलासशक्तिकरण पहल के परिणाम तक पहुँचा जा सकेगा।

सारांश

आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण गाँवों में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखे जा सकते है। गाँवों की सामाजिक व्यवस्था, भाईचारा, जाति एवं स्थानीयता पर आधारित थी अब उसका स्वरूप बदल रहा है परिवार में व्यक्तिवादिता बढ़ी है और सामूहिकता धीरे–धीरे समाप्त हो रही है। आधुनिकीकरण के कारण महिलाओं के जीवन में सकारात्मक प्रभाव के साथ नकारात्मक प्रभाव भी देखने में आये हैं। जहाँ उन्होंने अपने आपको आधुनिक बनाया है वहीं नकारात्मक प्रभाव के रूप में व्यक्तिवादिता, फिजूलखर्ची आदि का प्रभाव भी इसी आधुनिकीकरण के कारण आया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह योगेन्द्र (2014) माडर्नाइजेशन ऑफ इण्डियन ट्रेडिशन, रावत पब्लिकेशन जयपुर
2. अमर उजाला रूपायन, 24 सितम्बर 2010 ग्वालियर पृ. क्र.2
3. डॉ रानी, आशु (1999) महिला विकास कार्यक्रम, ईनाश्री पब्लिशर्स, जयपुर पृ. सं 19
4. मैरियन लेवी कान्ट्रासटिंग फेक्टर इन मॉडनाइजेशन ऐज चाइना एण्ड जापान 1955
5. डॉ सुकण्ठा प्रसाद शुक्ला व अन्य (2019), महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति उमारिया जिले के विशेष सन्दर्भ में वाल्यूम 7 2019 इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिव्यू एण्ड रिसर्च इन सोशल सांइसेज

Copyright © 2017, Dr. Nirmal Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.